सुपर स्टार -22

“'आज़ जब मैंने टीवी पर तुम्हारी खबर देखा तो एक बार तो बहुत बुरा लगा कि तुमने यहाँ आकर मुझे एक कॉल भी नहीं किया.. पर जब उन्होंने तुम्हारे काम के बारे में बातें की और तुम्हारी फिल्म के कुछ सीन दिखाए.. तब मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो गया। तुमने ऐसे वक़्त में ये मुकाम हासिल किया है.. जहाँ कोई दूसरा होता तो शायद फिर से खड़े होने की आस तक छोड़ देता। कल जो भी हो.. पर मेरे और हम सब के लिए तुम एक सुपरस्टार हो। ...”

Story By: (shakti-kapoor)
Posted: Wednesday, June 24th, 2015
Categories: हिंदी सेक्स स्टोरी
Online version: सुपर स्टार -22

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

सुपर स्टार -22

पापा ने शायद फ़ोन लाउडस्पीकर पर किया हुआ था, तभी मम्मी की आवाज़ आई।
'कैसे हो बेटा.. ठीक तो हो न.. ? और हम सब कल आ रहे हैं। तुम बिल्कुल भी चिंता मत करना।'
मैं- ठीक है। मैं अब बात नहीं कर पाऊँगा, आप सब बस आ जाईए..'
मैंने फ़ोन काट दिया।

ऐसा क्यूँ होता है कि जब भी कुछ बुरा होता है मेरे साथ.. तो मेरी हर बुरी याद फ़्लैश बैक की तरह मेरे सामने से गुज़र जाती है।
आज भी वैसा ही हो रहा था। मेरी आँखों से आंसू रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे और मैं पागल हुआ जा रहा था। जैसे-तैसे मैंने खुद को काबू में किया और अन्दर जहाँ श्वेता और निशा बैठे थे.. मैं वहाँ पहुँचा।

श्वेता- क्या हुआ ?
मैं- मेरी फैमिली आ रही है मुंबई.. उनके रहने का इंतजाम.. ?
श्वेता- मैं मैंनेज करवा देती हूँ।

मैं- और हाँ एक प्राइवेट जेट गया से उन्हें लाने के लिए भेज देना... मैं पैसे भर दूँगा और निशा.. मैं अब से उनके साथ ही रहूँगा। तुम सब के साथ बिताए हर वक़्त की बहुत याद आएगी।

निशा- तुम्हें इस वक़्त अपने परिवार की ज़रूरत भी है। हम सब वहाँ पर आते रहेंगे।
मैंने श्वेता से कहा- मैं थोड़ी देर आराम कर लूँ.. फिर सब लोग आयेंगे तो आज मुझे सोने को नहीं मिलने वाला है।

श्वेता- ह्म्म्म.. तुम आराम करो।

निशा- इतना बड़ा कांड कर दिया है तुमने और अब भी अपनी नींद पूरी करने में लगे हो।
वो अपना हाथ जोड़ते हुए बोली- महान हो तुम..!

फिर सब हंसने लगे और मैं आराम करने चला गया।
मैं अब अपने सपने में था और मेरे सामने मेरा पहला प्यार तृषा थी.. किसी ऊँची बिल्डिंग की छत से नीचे लटक रही थी।

'निशु प्लीज मुझे बचा लो। मैं तुम्हारे साथ जीना चाहती हूँ..'
वो अपना हाथ मेरी तरफ बढ़ा रही थी और मैं कितनी भी कोशिश कर रहा था.. पर उसके हाथ को थामना तो दूर.. उसे छू भी नहीं पा रहा था।
जितना वो मुझसे दूर होती जा रही थी मेरे दिल की धड़कन उतनी ही तेज़ हो रही थीं।
तभी तृषा का हाथ छूट गया और वो नीचे गिरने लगी।

मैं जोर से 'तृषा' चिल्लाता हुआ बिस्तर से उठ कर बैठ गया।
मेरी धड़कन अब बहुत तेज़ थीं और पूरा शरीर पसीने से नहाया हुआ था। मैं लम्बी-लम्बी साँसें ले रहा था। तभी निशा अन्दर दाखिल हुई।
'तुम्हारी फैमिली यहाँ आ चुकी है.. तैयार हो जाओ।'

मेरी दिल की धड़कन शांत भी नहीं हुई थीं कि इसे बेचैन होने की एक और वजह मिल गई।
मैं वैसे ही बिस्तर पर बैठा रहा.. जैसे-जैसे सब पास आते जा रहे थे.. मेरा गला सूखता जा रहा था और आँखें भरने लगी थीं।
दरवाज़ा खुला और सबसे पहले मम्मी पर नज़र पड़ी, फिर सब लोग आ गए।

मम्मी ने मुझे अपने सीने से लगाते हुए कहा- क्या हाल बना रखा है अपना.. एक बार भी

हमारी याद नहीं आई तुम्हें ?

पापा- अब ताने मत मारो.. मेरे बेटे को..
फिर उन्होंने भी मुझे गले से लगा लिया।

मेरी बहन ने भी हमें ज्वाइन कर लिया।
'मैं भी हूँ इस परिवार में.. एक फ़ोन कॉल तो किया नहीं गया। सब कितने परेशान थे।'

मैंने कुछ बोलने की कोशिश की तो मेरे गले ने मेरा साथ नहीं दिया। आवाज़ अन्दर ही दब कर रह गई। बस हम सब एक-दूसरे को पकड़ के रोए जा रहे थे।

पापा- बस भी करो। तुम सबने तो रोने में सास-बहू वाले सीरियल को भी पीछे छोड़ दिया है.. अब हमारा बेटा सुपरस्टार बन गया है। कम से कम खुश तो हो जाओ।
मुझे सबसे अलग करते हुए मुझे शांत करने लग गए।

मैंने अपने जज्बातों को किसी तरह काबू में किया। अब सब मुझे घेर कर बैठ गए थे। मैंने सबको देखा.. पर चाचा और चाची वहाँ नहीं थे.. सो मैंने पूछ लिया- चाचा जी भी आने वाले थे न.. ?

पापा ने निशा को इशारा किया और वो बाकी को कमरे में लाने चली गई। मैं सबसे बातें करने लग गया। थोड़ी देर में निशा कमरे में दाखिल हुई।
मैंने पूछा- चाचा जी कहाँ हैं ?

तभी कमरे में तृषा के मम्मी-पापा दाखिल हुए। मेरी आवाज़ गले तक ही आकर रुक गई।
तृषा की मम्मी- बेटा हम तुम्हारे गुनहगार हैं.. हमें जो सज़ा देना है दे दो। हममें इतनी हिम्मत नहीं कि हम तुमसे नज़रें भी मिला सकें।

वे दोनों अपने हाथ जोड़ते हुए कहने लगे- हमें माफ़ कर दो। जिन हाथों से अपनी बेटी का कन्यादान करना था हमें हमने उन्हीं हाथों से उसके हर अरमानों का गला घोंट दिया.. उसे मार डाला।

मैं बिस्तर से उठ कर उनके पास गया और उनके हाथ पकड़ कर बोला- अगर मैंने अपना प्यार खोया है.. तो आपने भी तो अपनी बेटी को खो दिया। मेरा प्यार तो महज़ चंद सालों का था.. पर आपके प्यार के सामने वो कुछ भी नहीं था। मैं जानता हूँ कि मैं जितना तड़पा हूँ.. तृषा के लिए.. उससे कई ज्यादा दु:ख आपको हुआ है। मैं तृषा की कमी पूरी नहीं कर सकता.. पर आपका बेटा तो बन ही सकता हूँ। तृषा भी होती तो वो कभी ये नहीं चाहती कि उसकी वजह से आपकी आँखों में आंसू आयें और माँ-बाप तो बच्चों को आशीर्वाद देते हैं.. उनसे माफ़ी नहीं मांगते।

उसके मम्मी-पापा ने मुझे गले से लगा लिया। तभी श्वेता और निशा कमरे में आईं।

निशा- बहुत हुआ रोना-धोना सबका.. अब चलिए खाना तैयार है और नक्श तुम्हें कल के लिए तैयारी भी करनी है। कल फिल्म का आखिरी शॉट है।

श्वेता- और जहाँ तक मुझे पता चला है कल वहाँ जाने-माने फिल्म क्रिटिक्स और मीडिया वाले होंगे.. सो कल गलती की कोई गुंजाइश नहीं है। अगर तुमने गलती की.. तो हो सकता है ये पहली फिल्म ही.. तुम्हारी आखिरी फिल्म बन जाए।

मेरे पापा- बेटा मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूँ।
मैं- हाँ कहिए।

‘आज़ जब मैंने टीवी पर तुम्हारी खबर देखा तो एक बार तो बहुत बुरा लगा कि तुमने यहाँ आकर मुझे एक कॉल भी नहीं किया.. पर जब उन्होंने तुम्हारे काम के बारे में बातें की और

तुम्हारी फिल्म के कुछ सीन दिखाए.. तब मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो गया। तुमने ऐसे वक़्त में ये मुकाम हासिल किया है.. जहाँ कोई दूसरा होता तो शायद फिर से खड़े होने की आस तक छोड़ देता। कल जो भी हो.. पर मेरे और हम सब के लिए तुम एक सुपरस्टार हो।
मैं- मैं तो आप सब का बेटा बन कर ही खुश हूँ।

फिर हम सब डिनर हॉल की ओर चल दिए। उस रात हमने खूब मस्ती की और जैसा कि मैंने सोचा था किसी ने मुझे सोने नहीं दिया।

दूसरे दिन सुबह सुबह मैं शूटिंग पर जाने के लिए तैयार हो गया। श्वेता की कार और ड्राईवर के साथ मैं लोकेशन की तरफ चल पड़ा। रास्ते में कहीं मेरे पुतले जलाए जा रहे थे.. तो कहीं मेरे नाम से नारेबाजियाँ हो रही थीं। लोकेशन के पास मीडिया वालों की पूरी फ़ौज खड़ी थी।

आज वहाँ यशराज से जुड़े सारे बड़े नाम मौजूद थे। मैं अन्दर दाखिल हुआ और अपनी वैन में बैठ गया। थोड़ी देर में निशा मेरी वैन में दाखिल हुई।

निशा- मेरी तरफ देखो।
मैं उसे दखने लगा।

'पता है.. क्यों मैं तुम्हें अपने साथ यहाँ लाई थी.. ? क्यूँ मैंने तुम पर इतना भरोसा किया ? क्यूँ तुम्हें एक्टिंग करने को कहती थी ?'
मैं- क्यूँ ?

निशा ने मेरे सीने पर हाथ रखते हुए कहा- इस दिल की वजह से.. एक्टिंग दिल से की जाती है और जिसका दिल जितना साफ़ है.. उसकी एक्टिंग में उतनी ही गहराई होती है। फरेब से भरे दिल.. दिखावा तो कर सकते हैं.. पर कभी एक्टिंग नहीं कर सकते। खुद पर

यकीन करो और सच्चे दिल से किरदार में डूब जाओ.. भूल जाना कि सामने जो खड़ा है.. उसके साथ नक्श का कोई रिश्ता है। बस एक बात याद रखना कि तुम वो हो.. जो इन स्क्रिप्ट के चंद पन्नों में लिखा है। ये याद भी मत करना कि तुम्हारी कोई दुनिया है.. जो इस स्क्रिप्ट से बाहर है। तुम खुद को भूलने आए थे न यहाँ.. आज ही सही वक़्त है.. खुद को भूल जाने का..

मैंने लम्बी सांस लेते हुए कहा- और कोई बात ?
निशा- नहीं..
फिर मैं जाने को मुड़ा.. तभी निशा ने मेरा हाथ पकड़ लिया।

'एक और बात मैं कहना चाहती हूँ। मैंने तुम्हें दर्द में चिल्लाते हुए देखा है, खुशी में मुस्कुराते हुए और अपने जज्बातों को जाहिर करते हुए भी देखा है। जब-जब इस फिल्म में तुम दर्द से चिल्लाए हो.. मेरी भी आँखें भर आई हैं। जब भी तुम यहाँ खुशी में मुस्कुराए हो.. मेरे होंठ भी मुस्काये हैं.. और जब-जब तुमने यहाँ फिल्म के किरदारों को अपने जज़्बात दिखाए हैं.. तब-तब ऐसा लगा है कि उन किरदारों की जगह तुम मुझसे ही कुछ कह रहे हो। तुम मेरे लिए एक सुपरस्टार हो और हमेशा रहोगे। मैं आज तक किसी की फैन नहीं थी.. पर तुमने मुझे अपना मुरीद बना लिया है। जाओ और दिखा दो इस दुनिया को.. कि तुमसे बड़ा एक्टर न पैदा हुआ है.. ना ही कभी पैदा होगा।

कहानी पर आप सभी के विचार आमंत्रित हैं।
कहानी जारी है।
realkanishk@gmail.com

Other stories you may be interested in

मैंने अपने आप को उसे सौंप दिया

अन्तर्वासना की कामुकता भरी सेक्स स्टोरीज के चाहवान मेरे प्यारे दोस्तो, मेरा नाम कविता है, मैं जयपुर राजस्थान से हूं. मैं, मेरे हस्बैंड और हमारा एक छोटा सा बेबी पिछले 3 सालों से यहां रह रहे हैं. मेरी शादी को […]
Full Story >>>

मम्मीजी आने वाली हैं-5

स्वाति भाभी अब कुछ देर तो ऐसे ही अपनी चूत से मेरे लण्ड पर प्रेमरस की बारिश सी करती रही फिर धीरे धीरे उसके हाथ पैरो की पकड़ ढीली हो गयी। अपने सारे काम ज्वार को मेरे लण्ड पर उगलने […]
Full Story >>>

विधवा औरत की चूत चुदाई का मस्त मजा-3

कहानी के पिछले भाग में आपने पढ़ा कि मैं उस विधवा औरत की बरसों से प्यासी चूत को चोदने में कामयाब हो गया था. मगर मुझे लग रहा था कि शायद कहीं कोई कमी रह गयी थी. मैंने तो अपना […]
Full Story >>>

मेरी चूत को बड़े लंड का तलब

मैं सपना जैन, फिर एक बार एक नई दास्तान लेकर हाज़िर हूँ. मेरी पिछली कहानी बड़े लंड का लालच जिन्होंने नहीं पढ़ी है, उन्हें यह नयी कहानी कहां से शुरू हुई, समझ में नहीं आएगी. इसलिये आप पहले मेरी कहानी […]
Full Story >>>

विधवा औरत की चूत चुदाई का मस्त मजा-2

कहानी के पिछले भाग में आपने पढ़ा कि मेरी बिल्डिंग में रहने वाली औरत के साथ मेरी दोस्ती हो गई थी. उसके पति के जाने के बाद वो अपने बच्चों को खुद ही पाल रही थी और एक दिन उसने […]
Full Story >>>